: चतुर्थ अध्याय :

: चतुर्थ अध्याय :

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं के विविध रूप

स्त्री और पुरूष समाज रथ के दो पहिए माने जाते हैं। प्राचीन काल से नारी का समाज में एक उँचा स्थान रहा है। पूराण काल से ही नारी उच्च पदाधिकारिणी रही हैं। वेदों में ऋचा लिखनेवाली नारी ही रही है इसका मतलब वह कभी शिक्षा से वंचित नहीं थी। इतिहास में तो वह युद्ध में वीरांगना के रूप में रही। वह कभी वीरांगना कभी आँसुओं से आँचल भिगाती कोमला, कभी पुरूषों के इशारे पर नाचती तो कभी गृहस्वामिनी, कभी लक्ष्मी, कभी धार्मिक रूढ़ियों से जकड़ी, कहीं उसकी पूजा होती है, कहीं उसे अपमानित किया जाता है। पितृसत्ता पद्धति के आ जाने के बाद नारी स्थिति बदलती गयी और उसे सभी से वंचित रखा जाने लगा। फिर समाज में उसका स्थान केवल भोग्या के रूप में रहा।

आधुनिक काल के पूर्वार्ध तक हमारी नई संवदेना पूराने सामाजिक नियमों के जकड़न से आबद्ध रही है और पुरूष वर्ग द्वारा रचित सामाजिक मान्यताओं और आचारों के परिवेश में नारी का व्यक्तित्व कैद हो गया। यह रूढ़ि-परम्पराओं से ग्रस्त, नैतिक बंधनों में जकड़ी नारी तब तक उसी प्रकार कैद रही जब तक उन्नीसवी सदी नहीं आयी। शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कारण आधुनिक काल की नारी पूर्ण रूप से सजग हो गई है। अब उसे कोई शक्ति आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती, चाहे वह समाज हो या साहित्य। कई नारियाँ विद्रोहिनी बन गयी, परंतु कुछ द्वन्द्व में झुलती रही।

अब तक उपन्यासों की नायिकाओं का चित्रण परम्परागतरूप में किया जाता था। परंतु धीरे-धीरे उपन्यासकारों का ध्यान इस परिवर्तन की ओर भी गया। और उन्होंने नायिकाओं के चित्रण के विविध रूपों के अंतर्गत इन रूपों का चित्रण भी किया। कुछ नयी प्रवृत्तियों का जैसे फ्रायड का मनोविश्लेषण, व्यक्तिवाद, समाजवाद, अस्तित्ववाद आदि का भी चित्रण इन उपन्यासकारों ने किया।

आज की ये आधुनिक नायिकाएँ सम्मिलित परिवारों में रहना नहीं चाहती। परिवार के प्रति

उनका देखने का दृष्टिकोन बदल गया है। वे परिवार के प्रति अपना कोई कर्तव्य मानने के लिए तैयार नहीं हैं। क्योंकि परिवार शब्द का अर्थ ही बदल गया है। आज की नायिकाएँ अपने में ही व्यस्त है। समाज से ये कटी-कटी रहना चाहती है। वे परम्पराओं का विरोध करती है। वे धार्मिक रूढ़ियों से भी मुक्त होना चाहती है। कुछ-कुछ तो फैशनपरस्त, विलासप्रिय दिखाई देती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् उच्च वर्ग को छोड़ मध्य और निम्न वर्ग की नारियों को घर की आर्थिक स्थिति में संतुलन बनाये रखने के लिए नौकरी करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

नायिकाओं की वैसे देखा जाये तो कई तरह की श्रेणियाँ बन जाती है। जैसे- सफल प्रेमिका, असफल प्रेमिका, पारिवारिक नायिका, अपारिवारिक नायिका, फैशन परस्त एवं विलासनी, विधवा, वेश्या, नर्तकी, राजनीतिज्ञ, विरांगना, कृषकबाला, मजदूरीन, जासुस, साहसी, कुण्ठित, प्रखर आदि।

उपर्युक्त नायिकाओं के रूपों के आधारपर हम कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का विश्लेषण अगर करना चाहे तो नायिकाओं के जितने रूप पाये जाते हैं उतने सभी रूप कमलेश्वरजी के उपन्यासों की नायिकाओं के नहीं है। उपर्युक्त रूपों में से सिर्फ चंद रूप ही कमलेश्वरजी के उपन्यासों में देखने को मिलते हैं। लेकिन इससे पहले हमें यह देखना जरूरी है कि ये रूप कौन से हैं, इनकी विशेषता कौनसी है आदि।

<u>सफल प्रेमिका</u> - शादी से पहले प्रेम करके अपने प्रेमी को अत्यंत प्रयासों से प्राप्त कर लेती है, फिर बाद में सभी की अनुमति जो प्राप्त कर लेती है, वह सफल प्रेमिका कहलाती है।

<u>असफल प्रेमिका</u> - ऐसी स्त्री जो शादी से पहले प्यार करती है परंतु अपने प्रेमी को प्राप्त नहीं कर सकती और मजबुरन जिसे शादी किसी और से करनी पड़ती है, ऐसी नायिका असफल प्रेमिका कहलाती है।

<u>पारिवारिक नायिका</u> - शादी के पश्चात् अत्यंत सुख से अपना पारिवारिक जीवन बितानेवाली नायिका सद्गृहस्थ नायिका कहलाती है।

<u>अपारिवारिक नायिका</u> - शादी हो जाने के पश्चात भी जो अपने परिवार में खुश नहीं रह सकती और परिवार को खुश नहीं कर पाती, साथ ही अपने पति को छोड़ अन्य पुरूष की ओर आकृष्ठ होती है, ऐसी नायिका असफल गृहस्थ नायिका कहलाती है।

फैशनपरस्त एवं विलासिनी - यह नायिका हमेशा नये-नये फैशनों के जरिए अपने आप को उच्चवर्गीय दिखाना चाहती है। विलासिनी बिना किसी प्रकार की चिंता किए, चैन विलास में डुबी रहनेवाली नायिका को कहा जाता है।

विधवा - जिसका पति मर चूका है, ऐसी नायिका को विधवा नायिका कहा जाता है।

वेश्या - किसी कारणवश वेश्या बनी हुई स्त्री वेश्या नायिका कहलाती है।

नर्तकी - उपन्यास की ऐसी नायिका जो दरबारों में होटलों में नृत्य का काम करती है।

राजनीतिज्ञ- राजनीति के क्षेत्र में काम करनेवाली नायिका राजनीतिज्ञ कहलाती है।

विरांगना- युद्ध में अपने साहसी, वीर कृत्यों से अपना वर्चस्व प्रस्तापित करनेवाली नायिका विरांगना कहलाती है।

कृषकबाला - किसान की पत्नी या बेटी जो उपन्यास की नायिका हो उसे कृषक बाला कहा जाता है।

मजदूरिन - मजदूरी के सहारे पेट भरनेवाली नायिका मजदूरिन कहलाती है।

जासुस - जासुसी कृत्ये करके लोगों को आश्चर्य में डालनेवाली नायिका जासुस कहलाती है।

साहसी - नित्य साहसी कृत्य करते रहनेवाली नायिका को साहसी नायिका कहा जाता है।

कुण्ठित - समस्याओं से घिरकर, द्वन्द्व में फँसकर कुण्ठाग्रस्त होनेवाली नायिकाओं को कुण्ठित नायिका कहा जाता है।

इस प्रकार उपर्युक्त नायिकाओं के प्रकार बताये जाते हैं। अब हम कमलेश्वरजी के उपन्यासों में इनमें से कौन से प्रकार की नायिकाएँ किस रूप में पायी जाती है, इस बात का विश्लेषण करेंगे।

कमलेश्वर के उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् हमें सबसे पहले इस बात का पता चल जाता है कि इनमें से अधिकतर नायिकाएँ विवाहित स्त्रियाँ ही हैं। उनके लगभग छह उपन्यासों की नायिकाएँ विवाहित है। तीन नायिकाएँ अविवाहित है। उम्र के हिसाब से देखा जाय तो सिर्फ एक बड़ी दादी को छोड़कर सभी नायिकाएँ युवावस्था में ही हैं। नौकरी पेशा नायिकाएँ सिर्फ दो हैं। उपर्युक्त प्रकारों के आधारपर देखा जाए तो सफल प्रेमिकाएँ तीन हैं। असफल प्रेमिकाएँ तीन हैं। असफल गृहस्थ नायिकाएँ पाँच है। विधवा नायिका एक है।

राजनीतिज्ञ एक है, कुण्ठित नायिका एक है। अब हम इनका विश्लेषण करेंगे।

सफल प्रेमिकाएँ :-

वैसे तो शादी से पहले प्रेम करके अपने प्रेमी को प्राप्त करनेवाली नायिकाओं को सफल प्रेमिकाएँ कहा जाता है। परंतु कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों में जिन नारियों का चित्रण किया है, उनमें ऐसी कोई नहीं है। शादी से पहले अपने प्रेमी के साथ सम्बन्ध प्रस्थापित करनेवाली बंसिरी, इरा और तारा है लेकिन न तो वे अपने जीवन में सफल दिखाई देती हे और न ही सफल प्रेमिकाएँ कहलाने की अधिकारी है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि कमलेश्वरजी ने अपनी नायिकाओं के चित्रण में इस बात का खयाल नहीं रखा है, कि वे सफल प्रेमिकाएँ बन गयी है या नही। उनके उपन्यासों की लगभग सभी नायिकाएँ प्रेमिका के रूप में सफल नहीं हुई है।

असफल प्रेमिकाएँ :-

कमलेश्वरजी के उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह पाते है कि कमलेश्वरजी के उपन्यासों की लगभग सभी नायिकाएँ असफल प्रेमिकाएँ ही हैं। चाहे बंसिरी हो जो हमेशा द्वन्द्व में रहती है। चाहे इरा हो जिसके जीवन में चार पुरूष आते हैं। चाहे सलमा हो जो शादी के बाद अपने पति को छोड़ सत्तार के प्रति आकर्षित है, परंतु वह उससे शादी नहीं कर पाती। चित्रा और उसके पति के बीच तीसरा आदमी आ जाने से उनमें शक का भँवर पैदा हो जाता है। जिसमें चित्रा सुमंत के प्रति आकृष्ट होती है लेकिन वह आत्महत्या कर लेता है। और वह अकेली रहती है। यही स्थिती लगभग समीरा की होती है जो अकेलेपन से बचने के लिए अपने पति के असिस्टंट से प्यार कर उसके साथ रहती है लेकिन फिर वही अकेलेपन की बात उसके बीच आ जाती है। इस प्रकार कमलेश्वर के उपन्यासों की लगभग सभी नायिकाएँ असफल प्रेमिका के रूप में सामने आती है।

अपारिवारिक नायिकाएँ :-

कमलेश्वरजी के दस उपन्यासों में से गृहस्थ नायिकाएँ पाँच है- इरा, सलमा, मालती, चित्रा और समीरा है। लेकिन ये सभी गृहस्थ नायिकाएँ अपने वैवाहिक जीवन में या गृहस्थ जीवन में असफल दिखाई देती

है। इरा आर्थिक विवशता के कारण अधेड़ उम्र के डाक्टर चंद्रशेखर के साथ विवाह करती है जो दो बच्चों का बाप है। लेकिन उसकी अचानक मौत हो जाती है। सलमा शादी-शुदा तो है परंतु उसका पति रात के वक्त औरतों की तरह तैयार होता है और अपने साथी के साथ उसके सम्बन्ध ठीक नहीं है। मालती राजनीतिक सफलता के पीछे भागनेवाली एक औरत है जो परिवार की उपेक्षा करती है। चित्रा और उसके पति के जीवन में तीसरा आदमी आ जाता है। और पति ही तीसरा आदमी बन जाता है। समीरा अपने पति प्रशांत की व्यस्तता की वजह से नकुल से सम्बन्ध प्रस्थापित करती है, उसके साथ रहने लगती है, लेकिन फिर वही बात आडे आ जाती है। इस प्रकार हम यह पाते हैं कि इस उपन्यासों में सभी नायिकाएँ असफल गृहस्थ नायिकाएँ है।

विधवा नायिका :-

कमलेश्वरजी के 'सुबह दोपहर शाम' उपन्यास की नायिका बड़ी दादी विधवा नायिका के रूप में उभरी है। वह एक अद्‌भूत चरित्रवाली स्त्री के रूप में चित्रित हुई है। उसका परिंदे से बातें करना, वन में सभी पशुओं के साथ तपस्या करना साथ ही खून का बदला खून से लेने की प्रतिज्ञा लेना ये सभी बाते एक गरिमा उसके व्यक्तित्व के चारों ओर ढ़ाल देती है।

कुण्ठित नायिका :-

कमलेश्वरजी के दसों उपन्यासों में वैसे तो कई कुण्ठित स्त्रियों के उदाहरण हम ले सकते हैं परंतु नायिका के रूप में कुण्ठित सिर्फ एक ही है और वह है -इरा। कमलेश्वरजी के डाक बंगला उपन्यास की नायिका इरा के जीवन में अब तक चार पुरूष आ चूके हैं। उसने यौवनावस्था में जिससे प्यार किया वह विमल, फिर जिनके पास उसने नौकरी की वह बतरा, जिनसे उसने शादी की वह डाक्टर और फिर सोळंखी। पहले तो वह युवावस्था के जोश में आकर विमल के साथ घरवालों का विरोध सहकर आती है, लेकिन बतरा के यहाँ नौकरी करने जब लग जाती है तो शक के कारण विमल उसे छोड़कर चला जाता है। फिर वह बतरा के पास रहती है। जरूरत समाप्त होते ही बतरा उसे घर से निकाल देता है और फिर वह अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ मजबुरन शादी कर लेती है। लेकिन उसकी मौत हो जाती है। फिर तो उसका जीवन इतना कुण्ठाग्रस्त बन जाता

है कि वह अपने जीवन में आनेवाले हर पुरूष से उसका अंतीम प्यार प्राप्त करना चाहती है। फिर वह तिलक के सामने अपने दार्शनिक विचार भी प्रकट करना चाहती है।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि, नायिकाओं के सभी प्रकार तो कमलेश्वर के उपन्यासों में पाये नहीं जाते, फिर भी अधिकांश रूप इन नायिकाओं के पाये जाते हैं। अगर हम उम्र के हिसाब से देखें तो नायिकाओं को हम निम्नलिखित कोटियों में ढाल सकते हैं -

1. युवा नायिकाएँ।

2. अधेड़ नायिकाएँ।

3. बुढ़ी नायिकाएँ।

युवा नायिकाएँ उन्हें कहा जा सकता है जिनकी उम्र 18 से 25 तक की है। चाहे व शादी शुदा हो या न हो। अधेड़ नायिकाएँ आम तौर पर 25 ते 45 साल तक के उम्र की मानी जाती है। आम तौर पर ये नायिकाएँ शादी-शुदा ही होती हे परंतु कुछ नायिकाएँ अपनी अधेड़ उम्र के बावजुद भी शादी शुदा नहीं होती। 45 या 50 साल के बाद की नायिकाएँ बुढ़ी नायिकाएँ कहलाती है।

कमलेश्वरजी के उपन्यासों को देखा जाए तो उनके उपन्यास में 'सुबह दोपहर शाम' उपन्यास की नायिका बड़ी दादी ही अकेली बुढ़ी नायिका के रूप में सामने आयी है। उनके अन्य सभी उपन्यासों की नायिकाएँ जैसे बंसिरी, इरा, सलमा, मालती, चाँदनी, चित्रा, समीरा, तारा आदि सभी युवा नायिकाओं के रूप में आरंभ में चित्रित हुई है। चाहे उपन्यास के अंततक आते आते वे अधेड़ उम्र की क्यों न लगे आरंभ में वे युवा नायिकाओं की कोटि में ही आ जाती है।

नायिकाओं की आर्थिक स्थिति के आधारपर उनके तीन वर्ग देखेन को मिलते है-

1. उच्चवर्ग।

2. मध्यवर्ग।

3. निम्न वर्ग।

उच्च वर्ग की नायिकाओं के अंतर्गत उच्चवर्गीय परिवरों में पली ऐसी स्त्री जो नायिका के रूप में चित्रित हुई है, उसका वर्णन आता है। मध्यवर्गीय परिवारों में पली स्त्री को मध्यवर्गीय नायिका और निम्न वर्गीय परिवारों में पली नायिका को निम्नवर्गीय कहा जाता है।

कमलेश्वर के उपन्यासों को इस दृष्टि से देखा जाय तो उनके उपन्यासों में सिर्फ मालती है अकेली ऐसी नायिका है जो उच्चवर्गीय कही जा सकती है। अन्य नायिकाओं में इरा, सलमा, नसीबन, चित्रा, समीरा, तारा और बड़ी दादी ये सभी नायिकाएँ मध्यवर्गीय नायिकाएँ कही जा सकती है। जब कि बंसरी और चाँदनी ये दो नायिकाएँ निम्न वर्गीय नायिकाओं के अंतर्गत आ जाती है।

परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों का बोझ उठानेवाली ओर घर का काम देखनेवाली ये दो वर्ग हो सकते। इनके आधारपर नायिकाओं को हम निम्नलिखित रूपों में विभाजित कर सकते है -

1. नौकरी पेशा / कामकाजी नायिकाएँ।

2. पारिवारिक नायिकाएँ।

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं को उपर्युक्त दृष्टि से परखा जाये तो यह बात साफ जाहिर हो जाती है कि, इन उपन्यासों में सिर्फ इरा, तारा और मालती ये तीन नायिकाएँ नौकरीपेशा की है। और किसी भी तरह से, चाहे वेश्या बनकर क्यों न हो अपने पेट को पालनेवाली नायिका चाँदनी है और अन्य सभी याने बंसिरी, सलमा, नसीबन, चित्रा, समीरा, और बड़ी दादी ये सभी नायिकाएँ पारिवारिक नायिकाएँ है जो सिर्फ घर का कामकाज देखती है। इन्हें हम पारंपारिक ढंग की नायिकाएँ कह सकते हैं। जब की नौकरी पेशा औरतों में आधुनिकता देखने को मिलती है।

डा. किरणबाला अरोड़ा ने कहा है -``व्यक्तिव एवं स्वभाव के आधारपर नारियों की निम्नलिखित कोटियाँ हो सकती है - अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, संस्कारशील, प्रगतिशील, विद्रोह, साहसी, खण्डित व्यक्तित्ववाली, मोहभंग की स्थिति से गुजरनेवाली, आत्मोत्सर्गी, अस्थिर मनोवृत्तिवाली, स्थिर मनोवृत्तिवाली, आस्थावान, आत्मभिमानी, कुण्ठित, दृढ़चित्तवाली, समर्पिता, निराशावादी, पलायनवादी, आत्मपीड़क या

परपीड़क तथा आवेगशील।''[1] उपर्युक्त प्रकारों में से जो प्रकार कमलेश्वरजी के उपन्यासों की नायिकाओं पर लागु हो सकते है, वे निम्नलिखित है -

अंतर्मुखी - ऐसी नायिकाएँ जो अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में असफल होती है। उनका यह स्वभाव उन्हें कुण्ठा ग्रस्त बना देता है। कमलेश्वर जी की 'इरा' और 'समीरा' ये दो पात्र अन्तर्मुखी नायिकाएँ हे।

बहिर्मुखी - ऐसी नायिकाएँ जो अपनी भावनाओं को प्रकट करने में सफल हो जाती है। कमलेश्वर की लगभग सभी नायिकाएँ इसी कोटि में आ जाती है।

संस्कारशील - परिवार के संस्कार जिसपर हुए है और समाज में जो सलीके से रहना पसंद करती है। ऐसी नायिकाएँ संस्कारशील कही जाती है। कमलेश्वर की 'मालती', 'चित्रा', 'समीरा' ये नायिकाएँ संस्कारशील नायिकाओं के अंतर्गत आती है।

प्रगतिशील - आधुनिकता से युक्त, प्रगतिशील विचारोंवाली नायिकाओं को प्रगतिशील नायिकाएँ कहते हैं। कमलेश्वरजी की मालती, इरा, चित्रा, समीरा, तारा आदि ऐसी ही नायिकाएँ है।

आस्थावन - जिस नायिका के जीवन में आशा एवं आस्था है वह आस्थावान नायिका कहलाती है। कमलेश्वरजी की 'चाँदनी' ऐसी नायिका है। 'चाँदनी' और 'चित्रा' दृढ़निश्चयी नायिकाओं के अंतर्गत भी आ जाती है।

खण्डित व्यक्तित्ववाली - कमलेश्वर जी की 'इरा' और 'मालती' ये दो नायिकाएँ इस कोटि में आती हैं।

मोहभंग की स्थिति से गुजरनेवाली - कमलेश्वरजी की 'बंसिरी', 'चाँदनी', 'समीरा' ये नायिकाएँ मोहभंग की स्थिति से गुजरनेवाली है।

आत्मभिमानी - 'चाँदनी' और 'नसीबन' ये दोनों नायिकाएँ इस कोटि में आती है।

इस प्रकार हम यह पाते है कि डा. किरण बाला अरोड़ा के द्वारा बताये गये सभी तो नहीं परंतु बहुत से व्यक्तित्व और स्वभाव के आधारपर प्रकार कमलेश्वर जी के उपन्यासों की नायिकाओं के पाये जाते है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों में जिन नायिकाओं का चित्रण किया है, उनमें नायिकाओं के विविध रूप पाये जाते हैं। प्राचीन काल से ही नारी के विविध रूप पाये जाते थे लेकिन आधुनिक काल तक आते-आते उसमें कई तरह से परिवर्तन होता गया। इस परिवर्तन का प्रभाव जैसे आधुनिक काल के अन्य साहित्यकारों पर पड़ा वैसे ही कमलेश्वरजी पर भी पड़ा। उन्होंने अपने उपन्यासों में जिन नायिकाओं का वर्णन किया है। उनमें सफल प्रेमिकाएँ, असफल प्रेमिकाएँ, अपारिवारिक नायिकाएँ, विधवा नायिका, कुण्ठित नायिका, युवा नायिकाएँ, बुढ़ी नायिका, उच्च, मध्य, निम्न वर्ग की नायिकाएँ, नौकरी पेशा, पारिवारिक, अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, संस्कारशील, प्रगतिशील, आस्थावान, खण्डित व्यक्तित्ववाली, मोहभंग की स्थिति से गुजरनेवाली आत्मभिमानी आदि कई रूप दिखाई देते हैं। इस आधारपर हम यह कह सकते हैं कि नायिकाओं के विविध रूपों का सफलतापूर्वक चित्रण कमलेश्वरजी ने किया है।

संदर्भ [redacted] सूची

1. डा. किरणवाला आरोड़ा - `साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी' - पृष्ठ 120